Subject :- Sociology Date :- 13/07/2020
Class :- 12th
Topic :- जाति तथा वर्ग में अन्तर
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No:- 112

जाति और वर्ग दोनों ही सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप हैं दोनों ही मानव समूह है और दोनों में ही उच्च और निम्न का संस्तरण पाया जाता है जिस तरह एक जाति के सदस्य अन्तर विवाह के नियमों का पालन करते हैं उसी तरह व्यावहारिक रूप से एक वर्ग के सदस्यों में भी वर्ग अन्तर विवाह की नीति अपनाई जाती है यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने और खासकर H.E. Hiller ने जाति और वर्ग में कोई भी मौलिक भेद स्वीकार नहीं किया है किन्तु यह विचार उचित नहीं है कुछ समानताओं के बावजूद भी दोनों एक-दूसरे से विभिन्न रूपों में भिन्न होने से निम्नलिखित विवेचना से सिद्ध हो सकता है।

(i) जाति की सदस्यता :- जन्म पर आधारित होती है। जबकि वर्ग की सदस्यता अन्य कारकों पर आधारित होती है एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है वह उसी जाति का सदस्य माना जाता है अर्थात जातीय सदस्यता जन्मरूपी कारक पर आधारित होती है जबकि शिक्षा, सम्पत्ती, पेशा एवं धर्म आदि के आधार पर एक व्यक्ति वर्ग की सदस्यता प्राप्त करता है।

(ii) जाति की सदस्यता प्रदत्त है जबकि वर्ग की सदस्यता अर्जित है :- किसी व्यक्ति को जातीय सदस्यता अर्जित करने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता जिस जाति में एक व्यक्ति का जन्म होता है उसे जाति की सदस्यता उसे स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।

2

इसके विपरीत वर्ग की सदस्यता स्वत: नहीं प्राप्त होती है, इसकी सदस्यता एक व्यक्ति अपनी क्षमता के आधार पर अर्जित करता है उदाहरणस्वरूप यदि कोई व्यक्ति शिक्षक वर्ग का सदस्य है तो उसे उसकी सदस्यता अर्जित होती है.

(iii) जाति एक बंद समूह है जबकि वर्ग एक खुला समूह है :- एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है आजीवन उसी जाति का सदस्य बना रहता है एक जाति की सदस्यता त्याग कर दूसरी जाति की सदस्यता ग्रहण करना संभव नहीं है G.S घुरिये ने भी बताया है कि जीवन की कोई भी सफलता या असफलता जातिय सदस्यता में परिवर्तन नहीं ला सकती है अत: जाति को बन्द समूह कहा जाता है [इसके विपरीत वर्ग की सदस्यता व्यक्तिगत क्षमता और योग्यता पर आधारित होती है अत: योग्यता और क्षमता में परिवर्तन होने के कारण वर्ग की सदस्यता में भी परिवर्तन संभव है अत: वर्ग एक खुला समूह है

(iv) जाति अंतर्विवाही होती है लेकिन वर्ग नहीं :- इसका मतलब है कि एक जाति के लोग जाति अन्त विवाह के नियमों का पालन करते है जाति अंत विवाह के नियम का अर्थ यह है कि एक जाति के नियम का अर्थ यह है कि सदस्य अपनी ही जाति में विवाह करते है यदि कोई व्यक्ति जाति से बाहर विवाह करता है तो उसे जाति, पंचायत द्वारा दण्ड दिया जाता है. G.S Ghurye. M.N. Srinivas. N.R Dutta, wester mark इत्यादि ने भी जाति को एक अन्त विवाही समूह

Scanned with CamScanner

कता है. इसके विपरीत वर्ग में इस प्रकार का कोई निश्चित नियम नहीं होता यद्यपि एक वर्ग के सदस्य भी अपने ही वर्ग में विवाह करना पसंद करते है परंतु जाति के समान वर्ग में वैवाहिक सदस्यता नहीं रहती है एक व्यक्ति अपने वर्ग के अलावे दुसरे वर्ग में भी शादी रचा सकता है उदाहरणस्वरूप दरभंगा महाराज धनी वर्ग के होकर भी निर्धन वर्ग में शादी करना उचित समझे थे तथा उन्होंने किया भी था

(v) जातियों के व्यवसाय निश्चित है वर्गो के नही:- जिस किसी भी समाज शास्त्री या सामाजिक चिन्तक ने जाति को जोरगणित किया है उन सबों ने यह विचार प्रकट किया है कि प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है और एक ही जाति के सदस्य के लिए अपनी प्रगति के व्यवसाय का पालन करना आवश्यक होता है, धोबी, बढ़ई, हजाम इत्यादि नाम अनेक व्यवसाय से ही जुड़े हुए है तथा इनके व्यवसाय परंपरागत व्यवसाय होता है और एक जाति के सदस्य के लिए अपनी प्रगति के सूचक है इसके विपरीत एक वर्ग के सदस्य के लिए कोई परंपरागत व्यवसाय नही होता है वे अपनी योग्यता क्षमता तथा अभिरूची के आधार पर पेशा का चयन कर सकते है.

(vi) जाति में खान-पान सम्बंधी कठोर नियम होता है, जबकि वर्ग में नही:- जाति में खान-पान संबंधी कठोर नियम होता है जबकि वर्ग में नही प्रत्येक जाति के सदस्यों को खान-पान से संबंधित नियमों का पालन करना पड़ता है G.S घुरयें के अनुसार प्रायः जाति के सदस्यों के हाथ से अन्न और जल ग्रहण नही करते हैं कच्चा भोजन के संबंधों में प्रतिबंध अधिक कठोर है परंतु इसके

विपरीत वर्ग मे खान-पान से संबंधित प्रतिबंध अधिक कठोर नही होते है एक वर्ण का सदस्य दुसरे वर्ग के सदस्य के हाथ से अन्न जल ग्रहण करता है.

(vii) जाति वर्ग की अपेक्षा अधिक स्थिर है :- चूँकि जाति की सदस्यता जन्म पर आधारित है और इसमे प्रायः परिवर्तन नही होता अतः जाति व्यवस्था एक स्थित व्यवस्था है इसके विपरीत वर्ग व्यवस्था समाज की सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है सामंत अर्द्धदास, किसान, पूंजीपति एवं श्रमिक आदि के रूप मे समय-समय पर अनेक वर्ग मिटते और उभरते रहते है.

(viii) वर्ग की अपेक्षा जाति मे सामाजिक भेदभाव, दुरी और छुआ-छुत अधिक पाया जाता है :- इसका मतलब कि एक जाति की तरह वर्ग के सदस्यों मे भी सामाजिक दुरी पायी जाती है परन्तु उतनी अधिक नही जितनी कि जाति के सदस्यो मे इसी तरह एक जाति के सदस्यो मे जितनी छुआ-छुत की भावना पायी जाती है उतना छुआ-छुत का भेदभाव वर्ग के सदस्य नही बरतते है एक उच्च जाति के सदस्य अत्यंत निम्न कही जाने वाली जाति की छाया से भी दुर रहना चाहते है इस संबंध मे Ghurye ने लिखा है कि जब एक आधुनिक डॉक्टर एक अस्पृश्य की नब्ज पकड़ता है तब उसका नब्ज या कलाई को रेशमी वस्त्र से ढक देता है ताकि प्रत्यक्ष रूप से उसके चर्म का स्पर्श कर अपवित्र न बन जाए इसके विपरीत वर्ग के सदस्य छुआ-छुत के भेदभाव का उतनी कठोरता से पालन नही करते है

5

तथा एक धनी व्यक्ति निर्धन वर्ग के व्यक्ति से छाया से दूर नहीं रहना चाहता है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner